अध्याय - पंचम

शोध सारांश निष्कर्ष एवं सुझाव

अध्याय – पंचम

शोध सार, निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 भूमिका :–

शिक्षा हमेशा से हमारे समाज की जीवनधारा रही है। शिक्षा जहां एक ओर मनुष्य का वौद्धिक विकास करके मनोवैज्ञनिक सम्बल प्रदान करती है, वहीं दूसरी ओर मनुष्य को आर्थिक रूप से स्वनिर्भर बनाती है। शिक्षा को जन – जन तक पहुंचाने में शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। राष्ट्र के निर्माण की प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका प्राचीन काल से ही महत्वपूर्ण देखी गयी है और भविष्य में भी देखी जाती रहेगी। इससे स्पष्ट हो जाता है कि प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक शिक्षक के महत्व को नकारा नही जा सकता । शिक्षा की राष्ट्रीय नीति के अंतर्गत भी शिक्षक की भूमिका को महत्वपूर्ण मानते हुए स्पष्ट रूप से कहा गया है कि किसी भी समाज में अध्यापकों के स्तर से उसकी सांस्कृतिक, सामाजिक दृष्टि का पता लगाया जा सकता है। कहा गया है कि कोई भी राष्ट्र अपने अध्यापकों के स्तर से ऊपर कभी नही उठ सकता।

शिक्षक अपने दायित्व का निष्ठापूर्वक निर्वाहन तभी कर सकेगा, जब वह बौद्धिक, मानसिक, शारीरिक, आर्थिक, एवं सामाजिक रूप से सक्षम हो। वह अपने व्यवसाय से संतुष्ट हो क्यों कि यदि वह अपने व्यवसाय से संतुष्ट नही होगा तो अपने कार्य को पूर्णतः निष्ठापूर्वक निर्वहन तभी कर सकेगा, जब वह वौद्धिक, मानसिक, शरीरिक, आर्थिक एवं सामाजिक रूप से सक्षम हो एवं अपने व्यवसाय से पूर्णतः संतुष्ट हो एवं उसे समस्याएं कम हों। अतः समाज एवं प्रशासन का यह नैतिक कर्तव्य होना चाहिए कि समय – समय पर शिक्षकों के हित एवं उनके गुणात्मक सुधार हेतु नीतिया बनाये एवं उनकी व्यावसायिक संतुष्टि एवं समस्याओं का विश्लेषण किया जाये। इसी बात को ध्यान में रखकर प्रस्तुत शोध में संविदा

शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि एवं समस्याओं का अध्ययन किया गया है।

5.2 समस्या का कथन :-

संविदा शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि एवं समस्याओं का अध्ययन करना।

5.3 शोध उद्देश्य :-

1. संविदा शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन (वर्तमान पद, पद से संबंधित कार्य, निर्धारित वेतनमान, विद्यालय प्रशासन, शिक्षा विभाग के नियम, नियमित शिक्षकों का व्यवहार, एवं सामाजिक प्रतिष्ठा के परिप्रेक्ष्य में) करना।
2. संविदा शिक्षकों की समस्याओं का अध्ययन करना।
3. संविदा शिक्षकों की स्थिति एवं शैक्षणिक गुणवत्ता सुधार हेतु सुझाव देना।

5.4 शोध के चर -

जिस गुण विशेषता या अवस्था का अध्ययन करना शोध का उद्देश्य हो, उसे चर कहते है। प्रस्तुत शोध में निम्न चरों का अध्ययन किया गया हैं।

स्वतंत्र चर -

साधारणतया प्रयोगकर्ता जिस कारण के प्रभाव का अध्ययन करना चाहता है और प्रयोग में जिस पर उसका नियंत्रण रहता है उसे सवतंत्र चर कहते हैं। प्रस्तुत शोध में वर्ग, लिंग, स्थान, वैवाहिक स्थिति, शैक्षणिक योग्यता, व्यवसायिक योग्यता को स्वतंत्र चर के रूप में लिया गया है।

आश्रित चर –

स्वतंत्र चर के कारण जो व्यवहार परिवर्तित होता है। और जिसका अध्ययन मापन किया जा सकता है उसे आश्रित चर कहते है।

प्रस्तुत शोध में वर्तमान पद, पद से संबंधित कार्य, निर्धारित वेतन मान, विद्यालय प्रशासन, शिक्षा विभाग के नियम, नियमित शिक्षकों का व्यवहार तथा सामाजिक प्रतिष्ठा आश्रित चर हैं।

5.5 शोध प्रश्न :–

1. क्या संविदा शिक्षक अपने वर्तमान पद से संतुष्ट हैं ?
2. क्या संविदा शिक्षक अपने कार्य से संतुष्ट हैं ?
3. क्या संविदा शिक्षक अपने निर्धारित वेतनमान से संतुष्ट हैं ?
4. क्या संविदा शिक्षक विद्यालय प्रशासन से संतुष्ट हैं ?
5. क्या संविदा शिक्षक नियमित शिक्षकों के व्यवहार से संतुष्ट हैं ?
6. क्या संविदा शिक्षक शिक्षा विभाग के नियमों से संतुष्ट हैं ?
7. क्या संविदा शिक्षक सामाजिक प्रतिष्ठा से संतुष्ट हैं ?
8. क्या लिंग के आधार पर संविदा शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर है ?
9. क्या वर्ग के आधार पर संविदा शिक्षकों कि व्यवसायिक संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर है ?
10. क्या स्थान के आधार पर संविदा शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर है ?
11. क्या वैवाहिक स्थिति के आधार पर संविदा शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर है ?
12. क्या शैक्षणिक योग्यता के आधार पर संविदा शिक्षकों कि व्यावसायिक संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर है ?
13. क्या व्यावसायिक योग्यता के आधार पर संविदा शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर है ?

5.6 शोध की परिकल्पनाएं –

1. संविदा शिक्षकों की लिंग के आधार पर व्यावसायिक संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. संविदा शिक्षकों की वर्ग के आधार पर व्यावसायिक संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. संविदा शिक्षकों की स्थान के आधार पर व्यावसायिक संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. संविदा शिक्षकों की वैवाहिक स्थिति के आधार पर व्यावसायिक संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
5. संविदा शिक्षकों की शैक्षणिक योग्यता के आधार पर व्यावसायिक संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
6. संविदा शिक्षकों की व्यवसायिक योग्यता के आधार पर व्यावसायिक संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

5.7 प्रतिदर्श :–

प्रस्तुत शोध हेतु प्रतिदर्श के रूप में मध्यप्रदेश के टीकमगढ़ जिले में कार्यरत 150 संविदा शिक्षकों को लिया गया जिसमें 102 पुरूष संविदा शिक्षक तथा 48 महिला संविदा शिक्षक हैं। प्रतिदर्श का चयन याच्द्दच्छिक विधि द्वारा किया गया है।

5.8 उपकरण का विवरण :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु डॉ. एस. के. गुप्ता के मार्गदर्शन में अनुसंधानकर्ता , ''संविदा शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि प्रपत्र'' तैयार किया गया।

प्रपत्र में दो खण्ड हैं :–

1. सामान्य खण्ड

2. विशिष्ट खण्ड

1. सामान्य खण्ड :–

इस खण्ड में संविदा शिक्षकों की व्यक्तिगत तथा परिवारिक जानकारी है।

2. विशिष्ट खण्ड :–

इस भाग में वर्तमान पद, पद से संबंधित कार्य, निर्धारित वेतनमान, विद्यालय प्रशासन, शिक्षा विभाग के नियम, नियमित शिक्षकों का व्यवहार एवं सामाजिक प्रतिष्ठा से संतुष्टता ज्ञात करने हेतु प्रथम एवं सप्तम उपखण्ड में 5 – 5 प्रश्न एवं अन्य सभी 3 – 3 प्रश्न हैं।

5.9 सांख्यिकी :–

शोध अध्ययन में उद्देश्य की पूर्ति हेतु संकलित प्रदत्तों के विशलेषण के लिए प्रतिशत एवं काई वर्ग परीक्षण (χ^2) प्रयोग किया गया है।

5.10 परिणाम :–

प्रस्तुत शोध में शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया था। काई वर्ग परीक्षण के आधार पर शून्य परिकल्पनाओं की सत्यता का विश्लेषण किया गया, जिसके आधार पर प्राप्त निष्कर्ष निम्नानुसार है।

1. संविदा शिक्षकों में लिंग के आधार पर कार्य की संतुष्टि, वेतनमान, विद्यालय प्रशासन से शिक्षा विभाग नियमों से संतुष्टि तथा नियमित शिक्षकों से सम्बंध की संतुष्टि एवं सामाजिक प्रतिष्ठता से संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है जबकि लिंग के आधार पर वर्तमान पद संतुष्टि में सार्थक अंतर पाया गया।

2. संविदा शिक्षकों में वर्ग के आधार पर वर्तमान पद से संतुष्टि, वेतनमान, विद्यालय प्रशासन संतुष्टि शिक्षा विभाग के नियम से संतुष्टि, नियमित शिक्षकों से संबंध से संतुष्टि एवं सामाजिक प्रतिष्ठा से संतुष्टि में सार्थक अंतर नहीं है, जबकि वर्ग के आधार पर पद से संबंधित कार्य से संतुष्टि में सार्थक अंतर पाया गया।
3. संविदा शिक्षकों में स्थान के आधार पर वर्तमान पद से संतुष्टि, पद से संवंधित कार्य से संतुष्टि, वेतनमान नियमित शिक्षकों से शिक्षा विभाग के नियमों से संतुष्टि एवं सामाजिक प्रतिष्ठा से संतुष्टि में सार्थक नहीं है, जबकि स्थान के आधार पर विद्यालय प्रशासन से संतुष्टि में सार्थक अंतर है।
4. संविदा शिक्षकों में वैवाहिक स्थिति के आधार पर वर्तमान पद से संतुष्टि, पद से संबंधित कार्य से संतुष्टि, वेतनमान, विद्यालय प्रशासन से संतुष्टि, शिक्षा विभाग के नियम से संतुष्टि एवं नियमित शिक्षकों से संबंध से संतुष्टि मे सार्थक अंतर नहीं है। जबकि वैवाहिक स्थिति के आधार पर सामाजिक प्रतिष्ठा से संतुष्टि में सार्थक अंतर है।
5. संविदा शिक्षकों में शैक्षणिक योग्यता के आधार पर वर्तमान पद से संतुष्टि, पद से संबंधित कार्य से संतुष्टि, वेतनमान, विद्यालय प्रशासन से संतुष्टि, शिक्षा विभाग के नियमों से संतुष्टि, नियमित शिक्षकों से संबंध से संतुष्टि सामाजिक प्रतिष्ठा से संतुष्टि मे कोई सार्थक अंतर नहीं है।
6. संविदा शिक्षकों में व्यवसायिक योग्यता के आधार पर वर्तमान पद से संतुष्टि, पद से संबंधित कार्य से संतुष्टि, वेतनमान से संतुष्टि, विद्यालय प्रशासन से संतुष्टि, शिक्षा विभाग के नियमों से संतुष्टि, नियमित शिक्षकों से संबंध से संतुष्टि एवं सामाजिक प्रतिष्ठा से संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

5.11 सुझाव :-

संविदाशिक्षकों के हितों को ध्यान में रखते हुए अनुसंधानकर्ता द्वारा निम्नलिखित सुझाव दिये जा रहे हैं।

1. संविदा शिक्षकों के वेतन मान में संशोधन करके स्थाई शिक्षकों के समान वेतन प्रदान किया जाये।
2. संविदा शिक्षकों के हित को ध्यान में रखकर और नियम बनाये जायें।
3. पद नाम परिवर्तित किया जाये।
4. संविदा शिक्षकों को 50 प्रतिशत महंगाई भत्ता प्रदान किया जाये।
5. संविदा शिक्षकों को पेंशन सुविधा प्रदान की जाये।
6. संविदा शिक्षकों के लिए कुछ निश्चित अवधि के पश्चात नियमित प्रक्रिया तो है परन्तु उसका वेतन भी बहुत कम है अतः वेतन बढ़ाया जाना चाहिए।
7. संविदा शिक्षकों के लिए अनुकंपा नियुक्ति की सुविधा प्रदान की जाये।
8. संविदा शिक्षकों के लिए तबादला नीति की सुविधा प्रदान की जाये।
9. संविदा शिक्षकों के संघ 'राज्य शिक्षाकर्मी संघ' को मान्यता प्रदान की जाये।
10. संविदा शिक्षकों को गृह भत्ता की सुविधा प्रदान की जाये।
11. संविदा शिक्षकों के लिए यात्रा भत्ता की सुविधा प्रदान की जाये।